हिन्दुत्व की विजय

गुजरात विधानसभा चुनाव में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की शानदार विजय वस्तुतः हिन्दुत्व की विजय है। वैसे भी इस विजय में कोई संदेह नहीं था। श्री नरेन्द्र मोदी ने हिन्दुत्व की राष्ट्रवादी विचारधारा को जिस स्पष्टता के साथ गुजरात में स्थापित किया उससे न केवल गुजरात में राष्ट्रवादी शक्तियाँ मजबूत हुई हैं अपितु वहाँ शान्ति एवं सौहार्द का वातावरण बना और विकास के नये कीर्तिमान भी स्थापित हुए। यह होना भी था क्योंकि जहाँ हिन्दुत्व होगा वहाँ विकास अवश्य होगा। आम जनता अपने नेतृत्व से सामाजिक एवं सांस्कृतिक सुरक्षा की गारन्टी चाहती है लेकिन जब भी कोई राजनीतिक दल इस पर खरा नहीं उतरता तो उसे मुँह की खानी पड़ती है। गुजरात में श्री मोदी जनता को सामाजिक सुरक्षा एवं विकास के मुद्दे पर विश्वास दिलाने में सफल रहे। यह भाजपा जैसे दल के लिए प्रेरणादायी जीत है क्योंकि लगातार तीसरी बार जीतने वाले मुख्यमंत्री के रूप में पहली बार भाजपा का कोई नेता सामने आया है। हिन्दुत्व और विकास का जो मुद्दा गुजरात में गूँजा है वह सिर्फ नारों तक सीमित नहीं रहा। गुजरात की जीत ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि जब भी कार्यशैली में शुचिता तथा पारदर्शिता का अभाव रहेगा एवं सिद्धान्तों पर सत्ता हावी होगी तो उत्तर प्रदेश जैसी शर्मनाक हार का सामना करना पड़ेगा और जब भी कार्यशैली में शुचिता एवं पारदर्शिता रहेगी तथा विचारधारा में स्पष्टता रहेगी तो गुजरात जैसी शानदार विजय बारबार होगी। यद्यपि वर्तम-ान राजनीतिक परिस्थितियों में यह कठिन है तो लेकिन असम्भव नहीं। श्री मोदी की कार्यप्रणाली पार्टी के कुछ वरिष्ठ एवं स्थानीय नेताओं के साथसाथ हिन्दू संगठनों के कुछ नेताओं को भी भले ही - रास न आई हो, चुनाव प्रचार के दौरान वह विरोध मुखर होकर सामने आया भी, परन्तु गुजरात की जनता ने हिन्दुत्व एवं विकास के मुद्दे पर उनकी साफगोई का पूर्णतः समर्थन किया; यह शानदार समर्थन अभिनन्दनीय है। आज जब सामाजिक

न्याय के नाम पर जातिवाद, क्षेत्रवाद अथवा भाषावाद को भड़काकर देश के परम्परागत सामाजिक ढाँचे को नष्ट करने की भयानक साजिश हो रही हो तथा धर्मनिरपेक्षता के नाम पर आतंकवाद, अलगाववाद एवं नक्सलवाद की राष्ट्रघातक गतिविधियों को भी जायज ठहराया जा रहा हो तब इन परिस्थितियों में यह जीत और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। यह भारतीय राजनीति की दिशा तय कर सकती है बशर्ते भारतीय जनता पार्टी इसे ईमानदारी से अंगीकार करे। इससे न केवल भारत का गौरव बचेगा अपितु राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की भी रक्षा होगी।